श्री रमेश जी मरदा

नाम	:	श्री रमेश जी मरदा
जन्मतिथि एवं स्थान	:	११ दिसम्बर १९५५/ चूरू (राजस्थान)
शिक्षा	:	बी. कॉम., एलएल.बी.
पद एवं पताा	:	आयात-निर्यात एसोसियेटस मरदा एजेंटस, १३३, मितल कोर्ट 'ए' बिंग, नरीमन पाईंट, मुम्बई-४०००२१
दूरभाष (कार्यालय)	:	२८२५१४३, २८४४०७८, २०४७२५१
टेलेक्स	:	०२२-८४७४५
फैक्स	:	(९१-२२)-२८४२०३९-२८७१९६९
पता (निवास)	:	४१, केडिया अर्पाटमेंट, डूंगरसी रोड, मालावार हिल, मुम्बई-४००००६
दूरभाष	:	३९७७८८१, ३९७४५११, ३९३११७४

पारिवारिक पृष्ठभूमि

पिताजी	:	स्व० भागीरथ जी मरदा, चूरू (राजस्थान)

<u>ससुराल पक्ष</u>

श्वसुरजी	:	श्री पुरूषोत्तमलाल जी सारडा, अबोहार (पंजाब)
पत्नी	:	श्रीमती रेशमा मरदा
संतान	:	पुत्र-वेदांत मरदा, पुत्री-कु. राशि मरदा कु. प्रेरिका मरदा

आपका जन्म सन् १९५५ में राजस्थान के चूरू नामक शहर में जाने-माने प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी, शिक्षाविद् व धर्मपरायण समाज सेवी श्री भागीरथ प्रसाद जी मरदा के यहाँ हुआ। श्री रमेश जी को ये सभी गुण विरासत में प्राप्त हुए हैं।

अपने बी. कॉम., एल.एल.बी. तक की शिक्षा जयपुर (राजस्थान) से प्राप्त की। एल.एल. बी. में सम्पूर्ण राजथान में आपका तृतीय स्थान रहा, अतएव विश्वविद्यालय ने आपको कांस्य पदक प्रदान करके सम्मानित किया। महाविद्यालय शिक्षा के दौरान आप 'बेस्ट स्काउट ऑफ बीकानेर डिवीजन' चुने गये व तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वी. वी. गिरी द्वारा सम्मानित किये गये। विश्वविद्यालय की शिक्षा के दौरान आप लॉ कालेज जयपुर के अध्यक्ष चुने गये। उस दौरान आपने सम्पूर्ण भारतवर्ष के विश्वविद्यालयों के बीच 'पाणिहारिन' नामक एक अत्यन्त सफल साहित्यिक सांस्कृतिक आयोजन आयोजित किया। कहते हैं कि पूत के पांव पालने में ही दिखाई देने लगते हैं यह पूर्वाभास था कि नियति भविष्य में आपसे अन्य कई महत्वपूर्ण संगठनात्मक कार्य कराने के लिए प्रतिबद्ध है।

आपका परिवारिक व्यवसाय आयात-निर्यात का है। मुम्बई, कलकत्ता, जयपुर, एवं चूरू (राजस्थान) में इसकी शाखाएँ हैं। आपकी व्यावसायिक कर्म स्थली मुम्बई है। व्यवसाय के साथ-साथ ही आपने मुम्बई में समाज सेवा का कार्य भी अत्यधिक रूचि लेते हुए किया। मुम्बई प्रादेशिक सभा, मुम्बई माहेश्वरी मंडल दोनों के ही आप मंत्री रहे व अनेक पदों पर भी कार्य किया।

पिछले १२ वर्षों में आप महासभा से जुडें हैं। वर्ष १९९० में, तिरूपति में आप अखिल भारतवर्षीय माहेश्वरी युवा संगठन के अध्यक्ष चुने गये। आपने **''सम्पर्क बढ़ाओ, संगठन बनाओ''** का नारा दिया। पूरे भारतवर्ष के युवाओं के बीच यह नारा गूंज उठा। त्रिवर्षीय कार्यकाल के दौरान प्रथम बार, राष्ट्रीय स्तर पर मद्रास, हैदराबाद व बैंगलोर में खेल-कूद प्रतियोगिता, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं क्रिकेट प्रतिस्पर्धाओं का वृहत आयोजन किया गया। इनमें सैकड़ो खिलाड़ियों एवं कलाकारों ने भाग लिया। जनवरी १९९४ में जैसलमेर के महाधिवेशन में आपको पुनः युवा संगठन के अध्यक्ष पद पर निर्विरोध चुना गया। इस सत्र के दौरान आपने एक नया नारा, **''आचार-विचार सुधारेंगें, समाज को सुधारेंगें'** दिया। इन ६ वर्षों में आपने करीब २०.००० (बीस हजार) पत्र लिखें एवं भारतवर्ष के १३२ स्थानों का भ्रमण किया। वर्तमान में आप दक्षिणांचल (प्रदेश

मुम्बई) से महासभा के लिये सदस्य हैं।

आप एक प्रभावशाली वक्ता एवं लेखक भी हैं। आपके लेख सामाजिक पत्र-पत्रिकाओं में समय-समय पर प्रकाशित होते रहते हैं। ''नगर श्री चूरू'' धर्मसंघ विश्वविद्यालय (गुरूकुल), संप्रति संस्थान आदि चूरू स्थित संस्थाओं के ट्रस्टी के रूप में तथा मुम्बई की सांस्कृतिक संस्था के संस्थापक सदस्य के रूप में आप निरंतर सामाजिक सेवा कार्यों में अपना अमूल्य योगदान दे रहे हैं।

व्यवसायिक एवं आमोद-प्रमोद हेतु आपने सिंगापुर, हांगकांग, मलेशिया फिलीपांइस आदि देशों का भ्रमण किया है। ''आचार-विचार सुधारेंगें, समाज को सवारेंगें'' प्रेरणास्रोत के तहत स्वयं सुधार का प्रयास व सेवा कार्य को जीवन की प्राथमिकता माना व इस हेतु कार्य करना, आपके जीवन का उद्‌देश्य है।

ऐसे सुलझे हुए, स्पष्ट विचारों वाले क्रियाशील मरदाजी के भविष्य के लिए मंगल कामना करते हुए यह आशा करते हैं कि मरदा जी ने ''युवा जागरण'' की जो मशाल जलाई है वह आने वाले समाज के कर्णधारों के हाथों में सदा प्रज्वलित रहे।